युगे-युगे क्रांति

विष्णु प्रभाकर

इस नाटक के लेखक विष्णु प्रभाकर जी है इन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, जीवनी, निबंध, एंकाकी, कविता आदि लगभग सौ कृतियाँ हिन्दी संसार को दी हैं।

इस नाटक में पात्रों और घटनाओं के माध्यम से ळेखक बताना चाहता है कि हर युग में लोगों के विचारों में मतभेद होता है। हर पीढ़ी अपनी काल की व्यवस्थाओं से खुश नहीं रहती तो और जब वह ना खुशी विद्रोह बनकर निकलती है तो क्रांति बन जाती है। पहले युग में क्रांति करने वाले आगे आने वाले युग में दकियानूसी बन जाते हैं। इस नाटक को पाँच भागों में बाँटा गया है।

- सन् 1875 के आस-पास- रामकली व कल्याणसिंह- कल्याणसिंह की परदा विरोध में क्रांति।
- सन् 1901 के आस-पास - कल्याणसिंह व रामकली के बेटे प्यारेलाल का एक विधवा से विवाह करने के लिए क्रांति।
- सन् 1920-21 के आस-पास - प्यारेलाल की बेटी शारदा का असहयोग आन्दोलन में भाग लेना व विमल से प्रेम विवाह करना।
- सन् 1942 के आस-पास - शारदा व विमल के बेटे प्रदीप का दूसरे धर्म की लड़की जैनेट से शादी करना।
- अति आधुनिक काल - प्रदीप व जैनेट की बेटी अन्विता का दीपक से प्रेम करना परन्तु नेल्सन से शादी करना।

सन् 1875 के आस-पास

रामकली कल्याणसिंह की पत्नी है। उस समय की सामाजिक व पराम्परिक व्यवस्था के अनुसार पति अपनी पत्नी से केवल रात में ही मिल सकता था और प्रकाश के लिए दिए की व्यवस्था होती थी। कल्याणसिंह अपनी पत्नी का चेहरा देखना चाहता था। रोशनी की व्यवस्था अच्छी न होने के कारण वह अपनी कहता है कि तेज रोशनी वाला दिया जलाया करो। कल्याणसिंह परदे का विरोधी था। वह अपनी पत्नी से कहता है कि बाहर वालों से परदा करो तो समझ में आता है लेकिन घरवालों से कैसा परदा। पति-पत्नी दोनों दिन में एक-दूसरे को देखने की योजना बनाते हैं कि सीढ़ियों पर एक-दूसरे से टकरा जाएंगे और एक-दूसरे को देख लेंगें। उसको पिता की नाराजगी का भी डर था। इस प्रकार वह अपनी पत्नी का चेहरा देख लेता है। वह परदा प्रथा का विरोध करके अपने युग में एक क्रांति को जन्म देता है। इस परम्परा

को तोड़ने पर कल्याणसिंह को उसके पिता ने मारा। काफी दिनों तक घर-परिवार तथा अड़ोस-पड़ोस वाले भी उसे भला-बुरा कहते रहे।

सन् 1901 के आस-पास

पच्चीस साल बाद कल्याणसिंह और रामकली के बेटे ने एक विधवा से विवाह करने के लिए क्रांति की। प्यारेलाल लाला सुगनचन्द की बेटी कलावती से शादी करना चाहता है। जब यह बात उसके पिता को पता चलती है तो वह बहुत नाराज़ होते हैं। वह अपने बेटे के विचारों से परेशान रहते हैं। वह कहते हैं कि तेरे लिए क्या ठीक है क्या गलत मैं जानता हूँ और इसका फैसला मैं ही करुँगा। तू अपनी मर्जी करके समाज में मेरी बदनामी नहीं करवा सकता परन्तु प्यारे लाल अपनी प्रतिज्ञा पर अटल है। वह विधवा विवाह का समर्थक है। वह अपनी माँ से कहता है जब पुरुष को एक से अधिक शादी करने का अधिकार है तो नारी ने ही कौन सा अपराध किया है। यह समाज उसे दूसरा विवाह करने का अधिकार क्यों नहीं देता। रामकली भी प्यारेलाल की इन बातों से बहुत परेशान होती है। वह और कल्याणसिंह प्यारेलाल को समझाने की बहुत कोशिश करते हैं परन्तु प्यारेलाल उनकी बात नहीं मानता। कल्याणसिंह बेटे की शादी रोकने के लिए उसे मारते-पीटते हैं तथा उसे घर से निकल जाने के लिए कहते हैं। प्यारेलाल घर छोड़कर चला जाता है। वह अपने साथियों की उपस्थिति में कलावती से विवाह करता है। कुछ लोग मंदिर के बाहर खड़े होकर इसका विरोध करते हैं। पंडित जी कहते हैं कि जब-जब भी सुधार और क्रांति का स्वर उठता है तो पाखंण्डी लोग इसी तरह बाधा उत्पन्न करते हैं। ये हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। इस तरह से प्यारेलाल की शादी हो जाती है। इसके लिए उसे अपने परिवार वालों व समाज से क्रांति करनी पड़ती है।

सन् 1920-21 के आस-पास

प्यारेलाल ने एक विधवा से विवाह करके आदर्श स्थापित किया किन्तु जब उसकी बेटी शारदा ने जब समय के साथ चलने की कोशिश की तो प्यारेलाल ने उसका साथ नहीं दिया। यह गाँधी जी के असहयोग आंदोलन का आरंभिक समय था। सारा देश आजादी की लड़ाई में भाग ले रहा था। प्यारेलाल व कलावती की बेटी शारदा भी इसमें भाग ले रही थी। वह धरने पर बैठी थी और धरना देने वाली महिलाओं को भाषण दे रही थी कि नारियों को भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर देश की आजादी में भाग लेना चाहिए। तभी वहाँ पर पुलिस आ जाती है। वह शारदा सहित सभी महिलाओं को गिरफ्तार कर लेती है। जब यह बात प्यारेलाल को पता चलती है तो बहुत क्रोधित होते है वह अपनी पत्नी से कहते हैं कि मैंने शारदा को कितना समझाया, पीटा, धमकाया परन्तु उसने मेरी बात नहीं सुनी। न जाने अब जेल में कितने दिन रहेगी। सभी जगह लोग हमारे बारे में बातें कर रहे हैं। कलावती समझाती

है परन्तु प्यारेलाल उसकी बात नहीं सुनता वह कहता है कि अब मैं उसे इस घर में आने नहीं दूँगा।

शारदा भी घर वापिस आना नहीं चाहती। वह विमल नाम के एक लड़के से प्रेम करती है। विमल उससे मिलने जेल में आता है। वह विमल से कहती है कि मैं उस घुटन भरे माहौल में नहीं रह सकती। मैं किसी आश्रम में चली जाऊँगी। विमल के पिता चन्द्रकिशोर उनकी शादी के लिए सहमत थे। शारदा के पिता इस बात का विरोध करते हैं परन्तु शारदा विमल से विवाह कर लेती है। शारदा ने धरना दिया, विदेशी कपड़ो की होली जलाई, पिता की मार खाई किन्तु वह अटल रही। अपनी इच्छा से उसने विमल से प्रेम-विवाह किय़ा। इस तरह शारदा ने भी अपने परिवार व समाज के खिलाफ जाकर क्रांति की।

सन् 1942 के आस-पास

शारदा व विमल ने विवाह करके नये मूल्य और आदर्श स्थापित किए। विमल व शारदा के दो बच्चे हैं। सुरेखा व प्रदीप। प्रदीप एक क्रिश्चियन लड़की जैनेट से प्रेम करता है और उससे शादी करना चाहता है परन्तु शारदा व विमल इस बात के लिए तैयार नहीं होते। जैनेट एक दफ्तर में काम करती है। प्रदीप अपने माता-पिता के खिलाफ जाकर जैनेट से शादी कर लेता है। शारदा और विमल चाहते हैं कि जैनेट का नाम व धर्म परिवर्तन करा देने से सारे दोष समाप्त हो जाएंगे। वह जैनेट का नाम बदलकर जाह्नवी रखना चाहते हैं किन्तु प्रदीप व जैनेट इसके लिए तैयार नहीं होते। विमल भी अपने बेटे को घर से निकल जाने के लिए कहते हैं। वह उसको जायदाद से भी बेदखल करने के लिए करते हैं। प्रदीप कहता है मुझे भी यह सब नहीं चाहिए। उसी समय वहाँ सुरेखा आ जाती है। वह अपने माता-पिता को समझाने की कोशिश करती है। प्रदीप घर छोड़कर चला जाता है। समय बितने के साथ-साथ विमल का क्रोध शांत हो जाता है और प्रदीप घर वापस लौट कर आ जाता है।

अति आधुनिक काल

प्रदीप और जैनेट के दो बच्चे हैं, अन्विता व अनिरुद्ध। अन्विता दीपक नाम के एक लड़के से प्रेम करती है। वह उससे शादी भी करना चाहती है। जब वह शादी का निमंत्रण लेकर आती है तो उसमें दीपक की जगह नेल्सन का नाम था। नेल्सन एक चित्रकार था। निमंत्रण में नेल्सन का नाम देखकर प्रदीप व जैनेट परेशान हो जाते हैं। अन्विता कहती है कि वह दीपक से प्रेम करती थी, परन्तु अब वह नेल्सन से शादी करेगी। दूसरी ओर उनका बेटा अनिरुद्ध शादी के बन्धन को व्यर्थ बताता है। उसके जीवन में कई लड़कियाँ आती हैं। जिसके साथ अच्छा लगता है उसके साथ रहता है जब अच्छा नहीं लगता तो छोड़ देता है। अन्विता व अनिरुद्ध माता-पिता को समझाते हैं कि समय के साथ आपको बदलना चाहिए। इस तरह से प्रदीप व जैनेट के विचारों और बच्चों के विचारों में टकराव होता है।

अन्त

उपयुक्त घटनाओं से पता चलता है कि क्रांति का अन्त नहीं है। नाटक के अन्त में देवीप्रसाद की पत्नी बताती है उनकी बेटी ने विवाह कर लिया है। यह सुनकर देवीप्रसाद को

लगता है कि वह अपनी बेटी की शादी की जिम्मेदारियों से मुक्त हो गया है किन्तु दूसरे ही पल उसे लगता है कि उसकी बेटी ने उससे अनुमति नहीं ली। उसे इस बात का दुख है और डर है कि कहीं मेरी बेटी ने गलत जीवन-साथी तो नहीं चुन लिया।

इस नाटक में इतिहास अपने-आप को बार-बार दोहरा रहा है। हर युग में नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी की मान्यताओं को तोड़ रही है।

विशेषता

युगे-युगे क्रांति की प्रमुख विशेषता यह है कि यह नाटक सामाजिक, राष्ट्रीय समस्याओ की तरफ ध्यान खिंचता है। यह नाटक यह संदेश भी देता है कि मूल्यों को तोड़ने के स्थान पर थोड़ा बदल दिया जाए तो संबंधो में मधुरता बनी रहती है। समय की माँग के अनुसार बदलना आवश्यक है। अनुभवों से सीख लेना चाहिए।

- युगे-युगे क्रांति नाट्य शैली में लिखा गया है।
- इसकी भाषा सरल और प्रभावशाली है।

III SEM BCA

Uma chaudhary